أَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا الْحَيٰوةُ

तुम ही ग़ालिब आओगे और **अल्लाह** तुम्हारे साथ है और वोह हरगिज़ तुम्हारे आ'माल में तुम्हें नुक़्सान न देगा[91] दुन्या की ज़िन्दगी

الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ أُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ

तो येही खेलकूद है[92] और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़ गारी करो तो वोह तुम को तुम्हारे सवाब अ़ता फ़रमाएगा और कुछ तुम से तुम्हारे माल

أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾

न मांगेगा[93] अगर उन्हें[94] तुम से त़लब करे और ज़ियादा त़लब करे तुम बुख़्ल करोगे और वोह बुख़्ल तुम्हारे दिलों के मैल ज़ाहिर कर देगा

هٰٓأَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ

हां हां येह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो[95] तो तुम में कोई बुख़्ल करता है

وَمَنْ يَّبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ

और जो बुख़्ल करे[96] वोह अपनी ही जान पर बुख़्ल करता है और **अल्लाह** बे नियाज़ है[97] और तुम सब मोह़ताज[98]

وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا أَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾ ع ٨

और अगर तुम मुंह फेरो[99] तो वोह तुम्हारे सिवा और लोग बदल लेगा फिर वोह तुम जैसे न होंगे[100]

آياتها ٢٩ ﴿٤٨ سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ ١١١﴾ ركوعاتها ٤

सूरए फ़त्ह़ मदनिय्या है, इस में उन्तीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿١﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ

बेशक हम ने तुम्हारे लिये रोशन फ़त्ह़ फ़रमा दी[2] ताकि **अल्लाह** तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के

इस की नासिख़ और एक क़ौल येह है कि येह आयत मोह़्कम है और दोनों आयतें दो मुख़्तलिफ़ वक़्तों और मुख़्तलिफ़ ह़ालतों में नाज़िल हुईं और एक क़ौल येह है कि आयत ''وَاِنْ جَنَحُوْا'' का हुक्म एक मुअ़य्यन क़ौम के साथ ख़ास है और येह आयत आ़म है कि कुफ़्फ़ार के साथ मुआ़हदा जाइज़ नहीं मगर इन्दज़्ज़रूरत जब कि मुसल्मान ज़ईफ़ हों और मुक़ाबला न कर सकें। **91 :** तुम्हें आ'माल का पूरा पूरा अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा। **92 :** निहायत जल्द गुज़रने वाली और इस में मश्ग़ूल होना कुछ नाफ़ेअ़ नहीं। **93 :** हां राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का हुक्म देगा ताकि तुम्हें इस का सवाब मिले। **94 :** या'नी अम्वाल को **95 :** जहां ख़र्च करना तुम पर फ़र्ज़ किया गया है। **96 :** सदक़ा देने और फ़र्ज़ अदा करने में। **97 :** तुम्हारे सदक़ात और त़ाआ़त से **98 :** उस के फ़ज़्लो रह़मत के। **99 :** उस की और उस के रसूल की इत़ाअ़त से **100 :** बल्कि निहायत मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार होंगे। **1 :** सूरए फ़त्ह़ मदनिय्या है, इस में चार रुकूअ़, उन्तीस आयतें, पांच सो अड़सठ कलिमे, दो हज़ार पांच सो उन्सठ ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** ''اِنَّا فَتَحْنَا'' हुदैबिया से वापस होते हुए हुज़ूर पर नाज़िल हुई, हुज़ूर को इस के नाज़िल होने से बहुत ख़ुशी ह़ासिल हुई और सह़ाबा ने हुज़ूर को मुबारक बादें दीं। (بخاری و مسلم و ترمذی) हुदैबिया

www.dawateislami.net

وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿۲﴾ وَّ

और तुम्हारे पिछलों के[3] और अपनी ने'मतें तुम पर तमाम कर दे[4] और तुम्हें सीधी राह दिखा दे[5] और

يَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿۳﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ

अल्लाह तुम्हारी ज़बर दस्त मदद फ़रमाए[6] वोही है जिस ने ईमान वालों के दिलों में

الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ

इत्मीनान उतारा ताकि उन्हें यक़ीन पर यक़ीन बढ़े[7] और अल्लाह ही की मिल्क हैं तमाम लश्कर आस्मानों

وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿۴﴾ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ

और ज़मीन के[8] और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है[9] ताकि ईमान वाले मर्दों और

एक कूंवां है मक्कए मुकर्रमा के नज़्दीक, **मुख़्तसर वाक़िआ** येह है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़्वाब देखा कि हुज़ूर मअ़ अपने अस्हाब के अम्न के साथ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए, कोई ह़ल्क़ किये हुए (या'नी सर मुंडाए) कोई क़स्र किये हुए (या'नी बाल कम कराए हुए है) और का'बए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुए, का'बे की कुन्जी ली, त़वाफ़ फ़रमाया, उ़म्रह किया। अस्ह़ाब को इस ख़्वाब की ख़बर दी, सब ख़ुश हुए फिर हुज़ूर ने उ़म्रे का क़स्द फ़रमाया और एक हज़ार चार सो अस्ह़ाब के साथ यकुम ज़िल क़ा'दा सिने 6 हिजरी को रवाना हो गए, ज़ुल हुलैफ़ा में पहुंच कर वहां मस्जिद में दो रक्अ़तें पढ़ कर उ़म्रे का एहराम बांधा और हुज़ूर के साथ अक्सर अस्ह़ाब ने भी। बा'ज़ अस्ह़ाब ने ''जुह़फ़ा''से एहराम बांधा, राह में पानी ख़त्म हो गया, अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ किया कि पानी लश्कर में बिल्कुल बाक़ी नहीं है सिवाए हुज़ूर के आफ़्ताबे के कि इस में थोड़ा सा है, हुज़ूर ने आफ़्ताबे में दस्ते मुबारक डाला तो अंगुश्त हाए मुबारक से चश्मे जोश मारने लगे, तमाम लश्कर ने पिया वुज़ू किये, जब मक़ामे उ़स्फ़ान में पहुंचे तो ख़बर आई कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बड़े सरो सामान के साथ जंग के लिये तय्यार हैं, जब हुदैबिया पर पहुंचे तो इस का पानी ख़त्म हो गया, एक क़त़रा न रहा, गरमी बहुत शदीद थी, हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कूंएं में कुल्ली फ़रमाई, इस की बरकत से कूंवां पानी से भर गया सब ने पिया ऊंटों को पिलाया यहां कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की त़रफ़ से ह़ाल मा'लूम करने के लिये कई शख़्स भेजे गए सब ने जा कर येही बयान किया कि हुज़ूर उ़म्रे के लिये तशरीफ़ लाए हैं, जंग का इरादा नहीं है लेकिन उन्हें यक़ीन न आया, आख़िर कार उन्हों ने उ़र्वह बिन मस्ऊ़द सक़फ़ी को जो त़ाइफ़ के बड़े सरदार और अ़रब के निहायत मुतमव्विल (मालदार) शख़्स थे तह़क़ीक़े ह़ाल के लिये भेजा, उन्हों आ कर देखा कि हुज़ूर दस्ते मुबारक धोते हैं तो सह़ाबा तबर्रुक के लिये ग़साला (हाथों का धोवन) शरीफ़ ह़ासिल करने के लिये टूटे पड़ते हैं, अगर कभी थूकते हैं तो लोग इस के ह़ासिल करने की कोशिश करते हैं और जिस को वोह ह़ासिल हो जाता है वोह अपने चेहरों और बदन पर बरकत के लिये मलता है, कोई बाल जिस्मे अक़्दस का गिरने नहीं पाता, अगर इह़्यानन (कभी) जुदा हुवा तो सह़ाबा उस को बहुत अदब के साथ लेते और जान से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखते हैं, जब हुज़ूर कलाम फ़रमाते हैं तो सब साकित हो जाते हैं, हुज़ूर के अदब व ता'ज़ीम से कोई शख़्स नज़र ऊपर को नहीं उठा सकता। उ़र्वह ने क़ुरैश से जा कर येह सब ह़ाल बयान किया और कहा कि मैं बादशाहाने फ़ारस व रूम व मिस्र के दरबारों में गया हूं मैं ने किसी बादशाह की येह अ़ज़मत नहीं देखी जो मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की उन के अस्ह़ाब में है, मुझे अन्देशा है कि तुम उन के मुक़ाबिल काम्याब न हो सकोगे। क़ुरैश ने कहा : ऐसी बात मत कहो, हम इस साल उन्हें वापस कर देंगे, वोह अगले साल आएं। उ़र्वह ने कहा : मुझे अन्देशा है कि तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे, येह कह कर वोह मअ़ अपने हमराहियों के त़ाइफ़ वापस चले गए और इस वाक़िए के बा'द अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मुशर्रफ़ ब इस्लाम किया, यहीं हुज़ूर ने अपने अस्ह़ाब से बैअ़त ली इस को बैअ़ते रिज़्वान कहते हैं, बैअ़त की ख़बर से कुफ़्फ़ार ख़ौफ़ज़दा हुए और उन के अहलुराय ने येही मुनासिब समझा कि सुल्ह़ कर लें। चुनान्चे, सुल्ह़ नामा लिखा गया और साले आयिन्दा हुज़ूर का तशरीफ़ लाना क़रार पाया और येह सुल्ह़ मुसल्मानों के ह़क़ में बहुत नाफ़ेअ़ हुई बल्कि नताइज के ए'तिबार से फ़त्ह़ साबित हुई, इसी लिये अक्सर मुफ़स्सिरीन फ़त्ह़ से सुल्हे़ हुदैबिया मुराद लेते हैं और बा'ज़ तमाम फ़ुतूह़ाते इस्लाम जो आयिन्दा होने वाली थीं और माज़ी के सीग़े से ता'बीर उन के यक़ीनी होने की वज्ह से है। (خازن وروح البیان) 3 : और तुम्हारी बदौलत उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमाए। (خازن وروح البیان) 4 : दुन्यवी भी और उख़्रवी भी 5 : तब्लीग़े रिसालत व इक़ामत मरासिमे रियासत में। (بیضاوی) 6 : दुश्मनों पर कामिल ग़लबा अ़त़ा कर के। 7 : और बा वुजूद अ़क़ीदए रासिख़ा के इत्मीनाने नफ़्स ह़ासिल हो। 8 : वोह क़ादिर है जिस से चाहे अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद फ़रमाए आस्मान व ज़मीन के लश्करों से या तो आस्मान और ज़मीन के फ़िरिश्ते मुराद हैं या आस्मानों के फ़िरिश्ते और ज़मीन के ह़ैवानात। 9 : उस ने मोमिनीन के दिलों की तस्कीन और वा'दए फ़त्ह़ो नुस्रत इस लिये फ़रमाया।

www.dawateislami.net

الْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ يُكَفِّرَ عَنْهُمْ

ईमान वाली औ़रतों को बाग़ों में ले जाए जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें और उन की बुराइयां

سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۙ﴿۵﴾ وَّ يُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ

उन से उतार दे　और येह अल्लाह के यहां बड़ी काम्याबी है　और अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों

وَ الْمُنٰفِقٰتِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ وَ الْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ

और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुशिरक मर्दों और मुशिरक औ़रतों को जो अल्लाह पर बुरा गुमान रखते हैं[10]

عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَ غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ لَعَنَهُمْ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ

उन्हीं पर है बुरी गर्दिश[11]　और अल्लाह ने उन पर ग़ज़ब फ़रमाया और उन्हें ला'नत की और उन के लिये जहन्नम तय्यार फ़रमाया

وَ سَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۶﴾ وَ لِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ

और वोह क्या ही बुरा अन्जाम है　और अल्लाह ही की मिल्क हैं आस्मानों और ज़मीन के सब लश्कर　और अल्लाह

عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۷﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۙ﴿۸﴾

इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाला है　बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर व नाज़िर[12] और खु़शी और डर सुनाता[13]

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُعَزِّرُوْهُ وَ تُوَقِّرُوْهُ ؕ وَ تُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ

ताकि ऐ लोगो तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीमो तौक़ीर करो　और सुब्ह़ो शाम अल्लाह की

اَصِيْلًا ﴿۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ

पाकी बोलो[14]　वोह जो तुम्हारी बैअ़त करते हैं[15] वोह तो अल्लाह ही से बैअ़त करते हैं[16]　उन के हाथों पर[17]

اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ

अल्लाह का हाथ है　तो जिस ने अ़ह्द तोड़ा उस ने अपने बड़े अ़ह्द को तोड़ा[18]　और जिस ने पूरा किया वोह अ़ह्द जो उस ने

10 : कि वोह अपने रसूल सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और उन पर ईमान लाने वालों की मदद न फ़रमाएगा। **11 :** अ़ज़ाब व हलाक की। **12 :** अपनी उम्मत के आ'माल व अह़वाल का ताकि रोज़े क़ियामत इन की गवाही दो। **13 :** या'नी मोमिनीने मुक़िर्रीन को जन्नत की ख़ुशी और ना फ़रमानों को अ़ज़ाबे दोज़ख़ का डर सुनाता। **14 :** सुब्ह़ की तस्बीह़ में नमाज़े फ़ज्र और शाम की तस्बीह़ में बाक़ी चारों नमाज़ें दाख़िल हैं। **15 :** मुराद इस बैअ़त से बैअ़ते रिज़्वान है जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हुदैबिया में ली थी। **16 :** क्यूं कि रसूल से बैअ़त करना अल्लाह तआ़ला ही से बैअ़त करना है जैसे कि रसूल की इत़ाअ़त अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त है। **17 :** जिन से उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की बैअ़त का शरफ़ ह़ासिल किया। **18 :** इस अ़ह्द तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा।

www.dawateislami.net

عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۰﴾ سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ

अल्लाह से किया था तो बहुत जल्द अल्लाह उसे बड़ा सवाब देगा[19] अब तुम से कहेंगे जो गंवार (दीहाती) पीछे रह

الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَ اَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ

गए थे[20] कि हमें हमारे माल और हमारे घर वालों ने जाने से मश्गूल रखा[21] अब हुज़ूर हमारी मग़्फ़िरत चाहें[22] अपनी ज़बानों से वोह बात कहते हैं

مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ

जो उन के दिलों में नहीं[23] तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के सामने किसे तुम्हारा कुछ इख़्तियार है अगर वोह तुम्हारा बुरा

ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۱﴾ بَلْ

चाहे या तुम्हारी भलाई का इरादा फ़रमाए बल्कि अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है बल्कि

ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰۤى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّ زُيِّنَ

तुम तो येह समझे हुए थे कि रसूल और मुसल्मान हरगिज़ घरों को वापस न आएंगे[24] और इसी को

ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَ ظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ وَ كُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَ مَنْ لَّمْ

अपने दिलों में भला समझे हुए थे और तुम ने बुरा गुमान किया[25] और तुम हलाक होने वाले लोग थे[26] और जो

يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ فَاِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿۱۳﴾ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ

ईमान न लाए अल्लाह और उस के रसूल पर[27] तो बेशक हम ने काफ़िरों के लिये भड़क्ती आग तय्यार कर रखी है और अल्लाह ही के लिये है

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ

आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब करे[28] और

كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۴﴾ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى

अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है अब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले[29] जब तुम ग़नीमतें

19 : या'नी हुदैबिया से तुम्हारी वापसी के वक़्त। 20 : क़बीलए गिफ़ार व मुज़ैना व जुहैना व अश्जअ़ व अस्लम के जब कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने साले हुदैबिया ब निय्यते उ़म्रह मक्कए मुकर्रमा का इरादा फ़रमाया तो ह़वालिये मदीना के गाउं वाले और अहले बादिया ब ख़ौफ़े कुरैश आप के साथ जाने से रुके बा वुजूदे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उ़म्रह का एह़राम बांधा था और कुरबानियां साथ थीं और इस से साफ़ ज़ाहिर था कि जंग का इरादा नहीं है फिर भी बहुत से आ'राब पर जाना बार हुवा और वोह काम का ह़ीला कर के रह गए और उन का गुमान येह था कि कुरैश बहुत ताक़त वर हैं मुसल्मान उन से बच कर न आएंगे सब वहीं हलाक हो जाएंगे, अब जब कि मददे इलाही से मुआ़मला उन के ख़याल के बिल्कुल ख़िलाफ़ हुवा तो उन्हें अपने न जाने पर अफ़्सोस होगा और मा'ज़िरत करेंगे 21 : क्यूं कि औ़रतें और बच्चे अकेले थे और उन का कोई ख़बर गीरां न था इस लिये हम क़ासिर रहे। 22 : अल्लाह तआ़ला उन की तक्ज़ीब फ़रमाता है : 23 : या'नी वोह ए'तिज़ार व त़लबे इस्तिग़्फ़ार में झूटे हैं। 24 : दुश्मन इन सब का वहीं ख़ातिमा कर देंगे। 25 : कुफ़्रो फ़साद के ग़लबे का और वा'दए इलाही के पूरा न होने का। 26 : अ़ज़ाबे इलाही के मुस्तह़िक़। 27 : इस आयत

مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ

लेने चलो[30] तो हमें भी अपने पीछे आने दो[31] वोह चाहते हैं अल्लाह का कलाम बदल दें[32]

قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ

तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम हमारे साथ न आओ अल्लाह ने पहले से यूंही फ़रमा दिया है[33] तो अब कहेंगे बल्कि

تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥﴾ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ

तुम हम से जलते हो[34] बल्कि वोह बात न समझते थे[35] मगर थोड़ी[36] उन पीछे रह गए हुए

الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ

गंवारों से फ़रमाओ[37] अन्क़रीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की त़रफ़ बुलाए जाओगे[38] कि उन से लड़ो या

يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا

वोह मुसल्मान हो जाएं फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा[39] और अगर फिर जाओगे जैसे

تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦﴾ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ

पहले फिर गए[40] तो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा अन्धे पर तंगी नहीं[41]

وَّ لَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ

और न लंगड़े पर मुज़ायक़ा और न बीमार पर मुआख़ज़ा[42] और जो अल्लाह और उस के

में ए'लाम है कि जो अल्लाह तआ़ला पर और उस के रसूल पर ईमान न लाए इन में से किसी एक का भी मुन्किर हो वोह काफ़िर है। **28 :** येह सब उस की मशिय्यत व हिक्मत पर है **29 :** जो हुदैबिया की हाज़िरी से क़ासिर रहे, ऐ ईमान वालो ! **30 :** ख़ैबर की। इस का वाक़िआ़ येह था कि जब मुसल्मान सुल्हे हुदैबिया से फ़ारिग़ हो कर वापस हुए तो अल्लाह तआ़ला ने उन से फ़त्हे ख़ैबर का वा'दा फ़रमाया और वहां की ग़नीमतें हुदैबिया में हाज़िर होने वालों के लिये मख़्सूस कर दी गईं, जब मुसल्मानों के ख़ैबर की त़रफ़ रवाना होने का वक़्त आया तो उन लोगों को लालच आया और उन्हों ने ब त़मए ग़नीमत कहा **31 :** या'नी हम भी ख़ैबर को तुम्हारे साथ चलें और जंग में शरीक हों अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **32 :** या'नी अल्लाह तआ़ला का वा'दा जो अहले हुदैबिया के लिये फ़रमाया था कि ख़ैबर की ग़नीमत ख़ास उन के लिये है। **33 :** या'नी हमारे मदीना आने से पहले। **34 :** और येह गवारा नहीं करते कि हम तुम्हारे साथ ग़नीमतें पाएं अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **35 :** दीन की **36 :** या'नी मह्ज़ दुन्या की ह़त्ता कि उन का ज़बानी इक़रार भी दुन्या ही की ग़रज़ से था और उमूरे आख़िरत को बिल्कुल नहीं समझते थे। (جمل) **37 :** जो मुख़्तलिफ़ क़बाइल के लोग हैं और उन में बा'ज़ ऐसे भी हैं जिन के ताइब होने की उम्मीद की जाती है। बा'ज़ ऐसे भी हैं जो निफ़ाक़ में बहुत पुख़्ता और सख़्त हैं, उन्हें आज़्माइश में डालना मन्ज़ूर है ताकि ताइब व ग़ैर ताइब में फ़र्क़ हो जाए इस लिये हुक्म हुवा कि उन से फ़रमा दीजिये **38 :** इस क़ौम से बनी ह़नीफ़ा यमामा के रहने वाले जो मुसैलमा कज़्ज़ाब की क़ौम के लोग हैं वोह मुराद हैं जिन से ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जंग फ़रमाई और येह भी कहा गया है कि उन से मुराद अहले फ़ारस व रूम हैं जिन से जंग के लिये ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने दा'वत दी। **39 मस्अला :** येह आयत शैख़ैने जलीलैन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہما के सिह़्ह़ते ख़िलाफ़त की दलील है कि इन ह़ज़रात की इत़ाअ़त पर जन्नत का और इन की मुख़ालफ़त पर जहन्नम का वा'दा दिया गया। **40 :** हुदैबिया के मौक़अ़ पर **41 :** जिहाद से रह जाने में। **शाने नुज़ूल :** जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई तो जो लोग अपाहज व साहिबे उ़ज़्र थे उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم हमारा क्या ह़ाल होगा ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **42 :** कि येह उ़ज़्र ज़ाहिर हैं और जिहाद में ह़ाज़िर न होना इन लोगों के लिये जाइज़ है क्यूं कि न येह लोग दुश्मन पर ह़म्ला करने की त़ाक़त रखते हैं न उस के

www.dawateislami.net

رَسُوۡلَهٗ يُدۡخِلۡهُ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ۚ وَمَنۡ يَّتَوَلَّ

रसूल का हुक्म माने अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां और जो फिर जाएगा[43]

يُعَذِّبۡهُ عَذَابًا اَلِيۡمًا ﴿۱۷﴾ لَقَدۡ رَضِىَ اللّٰهُ عَنِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ اِذۡ يُبَايِعُوۡنَكَ

उसे दर्दनाक अ़ज़ाब फ़रमाएगा बेशक अल्लाह राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे

تَحۡتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ فَاَنۡزَلَ السَّكِيۡنَةَ عَلَيۡهِمۡ وَاَثَابَهُمۡ

तुम्हारी बैअ़त करते थे[44] तो अल्लाह ने जाना जो उन के दिलों में है[45] तो उन पर इत्मीनान उतारा और

فَتۡحًا قَرِيۡبًا ﴿۱۸﴾ وَّمَغَانِمَ كَثِيۡرَةً يَّاۡخُذُوۡنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيۡزًا

उन्हें जल्द आने वाली फ़त्ह़ का इन्आ़म दिया[46] और बहुत सी ग़नीमतें[47] जिन को लें और अल्लाह इ़ज़्ज़त व

حَكِيۡمًا ﴿۱۹﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيۡرَةً تَاۡخُذُوۡنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمۡ هٰذِهٖ

हि़क्मत वाला है और अल्लाह ने तुम से वा'दा किया है बहुत सी ग़नीमतों का कि तुम लोगे[48] तो तुम्हें येह जल्द अ़ता फ़रमा दी

ह़म्ले से बचने और भागने की, उन्हीं के हुक्म में दाख़िल हैं। वोह बुढ्ढे ज़ईफ़ जिन्हें निशस्तो बरख़ास्त की त़ाक़त नहीं या जिन्हें दमा और खांसी है या जिन की तिल्ली बहुत बढ़ गई है और उन्हें चलना फिरना दुश्वार है, ज़ाहिर है कि येह उ़ज़्र जिहाद से रोकने वाले हैं इन के इ़लावा और भी आ'ज़ार हैं मसलन ग़ायत दरजे की मोहताजी और सफ़र के ज़रूरी ह़वाइज पर क़ुदरत न रखना या ऐसे अश्ग़ाले ज़रूरिय्या जो सफ़र से मानेअ़ हों जैसे किसी ऐसे मरीज़ की ख़िदमत जिस की ख़िदमत इस पर लाज़िम है और इस के सिवा कोई उस का अन्जाम देने वाला नहीं। **43 :** त़ाअ़त से ए'राज़ करेगा और कुफ़्रो निफ़ाक़ पर रहेगा **44 :** हुदैबिया में। चूंकि इन बैअ़त करने वालों को रिज़ाए इलाही की बिशारत दी गई इस लिये इस बैअ़त को बैअ़ते रिज़्वान कहते हैं, इस बैअ़त का सबब ब अस्बाबे ज़ाहिर येह पेश आया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हुदैबिया से ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अशराफ़े क़ुरैश के पास मक्कए मुकर्रमा भेजा कि उन्हें ख़बर दें कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बैतुल्लाह की ज़ियारत के लिये ब क़स्दे उ़मरह तशरीफ़ लाए हैं, आप का इरादा जंग का नहीं है और येह भी फ़रमा दिया था कि जो कमज़ोर मुसल्मान वहां हैं उन्हें इत्मीनान दिला दें कि मक्कए मुकर्रमा अ़न्क़रीब फ़त्ह़ होगा और अल्लाह तआ़ला अपने दीन को ग़ालिब फ़रमाएगा। क़ुरैश इस बात पर मुत्तफ़िक़ रहे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم इस साल तो तशरीफ़ न लाएं और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि अगर आप का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ करना चाहें तो करें, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ऐसा नहीं हो सकता कि मैं बिग़ैर रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के त़वाफ़ करूं, यहां मुसल्मानों ने कहा कि उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े ख़ुश नसीब हैं जो का'बए मुअ़ज़्ज़मा पहुंचे और त़वाफ़ से मुशर्रफ़ हुए। हुज़ूर ने फ़रमाया : मैं जानता हूं कि वोह हमारे बिग़ैर त़वाफ़ न करेंगे, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक्कए मुकर्रमा के ज़ईफ़ मुसल्मानों को ह़स्बे हुक्म फ़त्ह़ की बिशारत भी पहुंचाई, फिर क़ुरैश ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को रोक लिया यहां येह ख़बर मश्हूर हो गई कि ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद कर दिये गए, इस पर मुसल्मानों को बहुत जोश आया और रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सह़ाबा से कुफ़्फ़ार के मुक़ाबिल जिहाद में साबित रहने पर बैअ़त ली, येह बैअ़त एक बड़े ख़ारदार दरख़्त के नीचे हुई जिस को अ़रब में ''समुरह'' कहते हैं, हुज़ूर ने अपना बायां दस्ते मुबारक दाहने दस्ते अक़्दस में लिया और फ़रमाया कि येह उ़स्मान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) की बैअ़त है और फ़रमाया : या रब ! उ़स्मान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) तेरे और तेरे रसूल (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के काम में हैं इस वाक़िए से मा'लूम होता है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को नूरे नुबुव्वत से मा'लूम था कि ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद नहीं हुए जभी तो उन की बैअ़त ली, मुश्रिकीन इस बैअ़त का ह़ाल सुन कर ख़ाइफ़ हुए और उन्हों ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेज दिया। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिन लोगों ने दरख़्त के नीचे बैअ़त की थी उन में से कोई भी दोज़ख़ में दाख़िल न होगा। (مسلم شریف) और जिस दरख़्त के नीचे बैअ़त की गई थी अल्लाह तआ़ला ने उस को ना पदीद (ना पैद) कर दिया, साले आइन्दा सह़ाबा ने हर चन्द तलाश किया किसी को उस का पता भी न चला। **45 :** सिद्क़ व इख़्लास व वफ़ा। **46 :** या'नी फ़त्ह़े ख़ैबर का जो हुदैबिया से वापस हो कर छ[6] माह बा'द ह़ासिल हुई। **47 :** ख़ैबर की और अहले ख़ैबर के अम्वाल कि रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तक़्सीम फ़रमाए। **48 :** और तुम्हारी फ़ुतूह़ात होती रहेंगी।

وَ كَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَ يَهْدِيَكُمْ

और लोगों के हाथ तुम से रोक दिये[49] और इस लिये कि ईमान वालों के लिये निशानी हो[50] और तुम्हें

صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿۲۰﴾ وَّ اُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ

सीधी राह दिखा दे[51] और एक और[52] जो तुम्हारे बल (बस) की न थी[53] वोह अल्लाह के क़ब्ज़े

بِهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرًا ﴿۲۱﴾ وَ لَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا

में है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और अगर काफ़िर तुम से लड़ें[54]

لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا یَجِدُوْنَ وَلِیًّا وَّ لَا نَصِیْرًا ﴿۲۲﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِیْ

तो ज़रूर तुम्हारे मुक़ाबले से पीठ फेर देंगे[55] फिर न कोई हिमायती पाएंगे न मददगार अल्लाह का दस्तूर है कि

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِیْلًا ﴿۲۳﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ

पहले से चला आता है[56] और हरगिज़ तुम अल्लाह का दस्तूर बदलता न पाओगे और वोही है जिस ने

كَفَّ اَیْدِیَهُمْ عَنْكُمْ وَ اَیْدِیَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ

उन के हाथ[57] तुम से रोक दिये और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिये वादिये मक्का में[58] बा'द इस के कि तुम्हें उन पर क़ाबू

عَلَیْهِمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرًا ﴿۲۴﴾ هُمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ

दे दिया था और अल्लाह तुम्हारे काम देखता है वोह[59] वोह हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और

صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ الْهَدْیَ مَعْكُوْفًا اَنْ یَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَ

तुम्हें मस्जिदे हराम से[60] रोका और क़ुरबानी के जानवर रुके पड़े अपनी जगह पहुंचने से[61] और

49 : कि वोह ख़ाइफ़ हो कर तुम्हारे अहलो इयाल को ज़रर न पहुंचा सके। इस का वाक़िआ येह था कि जब मुसल्मान जंगे ख़ैबर के लिये रवाना हुए तो अहले ख़ैबर के हलीफ़ बनी असद व ग़त्फ़ान ने चाहा कि मदीनए तृय्यिबा पर हम्ला कर के मुसल्मानों के अहलो इयाल को लूट लें अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों में रो'ब डाला और उन के हाथ रोक दिये। **50 :** येह ग़नीमत देना और दुश्मनों के हाथ रोक देना। **51 :** अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करने और काम उस पर मुफ़व्वज़ (के सिपुर्द) करने की जिस से बसीरत व यक़ीन ज़ियादा हो। **52 :** फ़त्ह़ **53 :** मुराद इस से या मग़ानिमे फ़ारिस व रूम (फ़ारस व रूम की ग़नीमतें) हैं या ख़ैबर जिस का अल्लाह तआ़ला ने पहले से वा'दा फ़रमाया था और मुसल्मानों को उम्मीदे काम्याबी थी अल्लाह तआ़ला ने उन्हें फ़त्ह़ दी और एक क़ौल येह है कि वोह फ़त्हे मक्का है और एक क़ौल है कि वोह हर फ़त्ह़ है जो अल्लाह तआ़ला ने मुसल्मानों को अ़ता फ़रमाई। **54 :** या'नी अहले मक्का या अहले ख़ैबर के हुलफ़ा असद व ग़त्फ़ान। **55 :** मग़लूब होंगे और उन्हें हज़ीमत होगी **56 :** कि वोह मोमिनीन की मदद फ़रमाता है और काफ़िरों को मक़्हूर (रुस्वा) करता है। **57 :** या'नी कुफ़्फ़ार के **58 :** रोज़े फ़त्हे मक्का। और एक क़ौल येह है कि "बत्ने मक्का" से हुदैबिया मुराद है और इस के **शाने नुज़ूल** में हज़रते अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि अहले मक्का में से अस्सी हथियार बन्द जवान "जबले तन्ईम" से मुसल्मानों पर हम्ला करने के इरादे से उतरे, मुसल्मानों ने उन्हें गिरिफ़्तार कर के सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की ख़िदमत में हाज़िर किया। हुज़ूर ने मुआ़फ़ फ़रमाया और छोड़ दिया। **59 :** कुफ़्फ़ारे मक्का **60 :** वहां पहुंचने से और उस का त़वाफ़ करने से **61 :** या'नी मक़ामे ज़ब्ह़ से जो ह़रम में है।

www.dawateislami.net

لَوْ لَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَ نِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ

अगर येह न होता कुछ मुसल्मान मर्द और कुछ मुसल्मान औ़रतें[62] जिन की तुम्हें ख़बर नहीं[63] कहीं तुम उन्हें रौंद डालो[64]

فَتُصِیْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَیْرِ عِلْمٍ ۚ لِیُدْخِلَ اللّٰهُ فِیْ رَحْمَتِهٖ مَنْ

तो तुम्हें उन की त़रफ़ से अन्जानी में कोई मक्रूह (ना पसन्दीदा शै) पहुंचे तो हम तुम्हें उन के क़िताल की इजाज़त देते उन का येह बचाव इस लिये है कि अल्लाह अपनी रह़मत में

یَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَیَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ﴿۲۵﴾ اِذْ

दाख़िल करे जिसे चाहे अगर वोह जुदा हो जाते[65] तो हम ज़रूर उन में के काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब देते[66] जब

جَعَلَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِیَّةَ حَمِیَّةَ الْجَاهِلِیَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ

कि काफ़िरों ने अपने दिलों में अड़ (ज़िद) रखी वोही ज़मानए जाहिलिय्यत की अड़[67] तो अल्लाह ने अपना

سَكِیْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَ اَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَ

इत़्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों पर उतारा[68] और परहेज़ गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया[69] और

ع ۳ كَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَ اَهْلَهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ﴿۲۶﴾ لَقَدْ صَدَقَ

वोह इस के ज़ियादा सज़ावार और इस के अह्ल थे[70] और अल्लाह सब कुछ जानता है[71] बेशक अल्लाह

اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْیَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ

ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्वाब[72] बेशक तुम ज़रूर मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होगे अगर अल्लाह चाहे

اٰمِنِیْنَ ۙ مُحَلِّقِیْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ مُقَصِّرِیْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ

अम्नो अमान से अपने सरों के[73] बाल मुंडाते या[74] तरश्वाते बे ख़ौफ़ तो उस ने जाना जो तुम्हें

62 : मक्कए मुकर्रमा में हैं 63 : तुम उन्हें पहचानते नहीं 64 : कुफ़्फ़ार से क़िताल करने में 65 : या'नी मुसल्मान काफ़िरों से मुमताज़ हो जाते 66 : तुम्हारे हाथ से क़त्ल करा के और तुम्हारी क़ैद में ला कर। 67 : कि रसूले करीम ﷺ और हुज़ूर के अस्ह़ाब को का'बए मुअ़ज़्ज़मा से रोका 68 : कि उन्हों ने साले आयिन्दा आने पर सुल्ह़ की अगर वोह भी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की त़रह़ ज़िद करते तो ज़रूर जंग हो जाती। 69 : कलिमए तक़्वा से मुराद "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" है। 70 : क्यूं कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपने दीन और अपने नबी ﷺ की सोह़बत से मुशर्रफ़ फ़रमाया। 71 : काफ़िरों का ह़ाल भी जानता है मुसल्मानों का भी, कोई चीज़ उस से मख़्फ़ी नहीं। 72 **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम ﷺ ने हुदैबिया का क़स्द फ़रमाने से क़ब्ल मदीनए त़य्यिबा में ख़्वाब देखा था कि आप मअ़ अस्ह़ाब के मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ब अम्न दाख़िल हुए और अस्ह़ाब ने सर के बाल मुंडाए बा'ज़ ने तरश्वाए, येह ख़्वाब आप ने अपने अस्ह़ाब से बयान फ़रमाया तो उन्हें ख़ुशी हुई और उन्हों ने ख़याल किया कि इसी साल वोह मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होंगे, जब मुसल्मान हुदैबिया से बा'द सुल्ह़ के वापस हुए और उस साल मक्कए मुकर्रमा में दाख़िला न हुवा तो मुनाफ़िक़ीन ने तमस्ख़ुर (त़न्ज़) किया त़ा'न किये और कहा कि वोह ख़्वाब क्या हुवा, इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और इस ख़्वाब के मज़्मून की तस्दीक़ फ़रमाई कि ज़रूर ऐसा होगा। चुनान्चे, अगले साल ऐसा ही हुवा और मुसल्मान अगले साल बड़े शानो शकोह के साथ मक्कए मुकर्रमा में फ़ातेह़ाना दाख़िल हुए। 73 : तमाम 74 : थोड़े से।

تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِیْبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ

मा'लूम नहीं[75] तो इस से पहले[76] एक नज़्दीक आने वाली फ़त्ह रखी[77] वोही है जिस ने अपने रसूल को

بِالْهُدٰى وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّیْنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ

हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे[78] और अल्लाह काफ़ी है

شَهِیْدًا ﴿٢٨﴾ؕ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ

गवाह[79] मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उन के साथ वाले[80] काफ़िरों पर सख़्त हैं[81]

رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا یَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا٘

और आपस में नर्म दिल[82] तू उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते सज्दे में गिरते[83] अल्लाह का फ़ज़्ल व रिज़ा चाहते

سِیْمَاهُمْ فِیْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ ۛۚ وَ معانقہ ۱۵

उन की अ़लामत उन के चेहरों में है सज्दों के निशान से[84] येह उन की सिफ़त तौरैत में है और

مَثَلُهُمْ فِی الْاِنْجِیْلِ ۛۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــٴَـهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ

उन की सिफ़त इन्जील में[85] जैसे एक खेती उस ने अपना पट्ठा निकाला फिर उसे त़ाक़त दी फिर दबीज़ हुई

فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ یُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِیَغِیْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ

फिर अपनी साक़ पर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है[86] ताकि उन से काफ़िरों के दिल जलें अल्लाह ने वा'दा किया

75 : या'नी येह कि तुम्हारा दाख़िल होना अगले साल है और तुम इसी साल समझे थे और तुम्हारे लिये येह ताख़ीर बेहतर थी कि इस के बाइस वहां के ज़ईफ़ मुसल्मान पामाल होने से बच गए। **76 :** या'नी दुख़ूले ह़रम से क़ब्ल **77 :** फ़त्हे ख़ैबर कि फ़त्हे मौऊ़द (वा'दा की गई फ़त्ह) के ह़ासिल होने तक, मुसल्मानों के दिल इस से राह़त पाएं, इस के बा'द जब अगला साल आया तो अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर के ख़्वाब का जल्वा दिखलाया और वाक़िआ़त इस के मुत़ाबिक़ रूनुमा हुए चुनान्चे, इर्शाद फ़रमाता है : **78 :** ख़्वाह वोह मुश्रिकीन के दीन हों या अहले किताब के, चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने येह ने'मत अ़त़ा फ़रमाई और इस्लाम को तमाम अद्यान पर ग़ालिब फ़रमा दिया। **79 :** अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत पर जैसा कि फ़रमाता है : **80 :** या'नी उन के अस्ह़ाब **81 :** जैसा कि शेर शिकार पर और सह़ाबा का तशद्दुद कुफ़्फ़ार के साथ इस ह़द पर था कि वोह लिह़ाज़ रखते थे कि उन का बदन किसी काफ़िर के बदन से न छू जाए और उन के कपड़े से किसी काफ़िर का कपड़ा न लगने पाए। (مدارک) **82 :** एक दूसरे पर मह़ब्बत व मेहरबानी करने वाले ऐसे कि जैसे बाप बेटे में हो और येह मह़ब्बत इस ह़द तक पहुंच गई कि जब एक मोमिन दूसरे को देखे तो फ़र्ते मह़ब्बत से मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा करे। **83 :** कसरत से नमाज़ें पढ़ते, नमाज़ों पर मुदावमत करते **84 :** और येह अ़लामत वोह नूर है जो रोज़े क़ियामत उन के चेहरों से ताबां होगा इस से पहचाने जाएंगे कि इन्हों ने दुन्या में अल्लाह तआ़ला के लिये बहुत सज्दे किये हैं और येह भी कहा गया है कि उन के चेहरों में सज्दे का मक़ाम माहे शब चहार दहुम (चौदहवीं रात के चांद) की त़रह़ चमकता दमकता होगा। अ़त़ा का क़ौल है कि शब की दराज़ नमाज़ों से उन के चेहरों पर नूर नुमायां होता है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि जो रात को नमाज़ की कसरत करता है सुब्ह़ को उस का चेहरा ख़ूब सूरत हो जाता है और येह भी कहा गया है कि गर्द का निशान भी सज्दे की अ़लामत है। **85 :** येह मज़्कूर है कि **86 :** येह मिसाल इब्तिदाए इस्लाम और इस की तरक़्क़ी की बयान फ़रमाई गई कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तन्हा उठे फिर अल्लाह तआ़ला ने आप को आप के मुख़्लिसीन अस्ह़ाब से तक़्विय्यत दी। क़तादा ने कहा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अस्ह़ाब की मिसाल इन्जील में येह लिखी है कि एक क़ौम खेती की त़रह़ पैदा होगी वोह नेकियों का हुक्म करेंगे बदियों से मन्अ़ करेंगे, कहा गया है कि खेती हुज़ूर हैं और इस की शाख़ें अस्ह़ाब और मोमिनीन।

www.dawateislami.net

ع ١٢ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

उन से जो उन में ईमान और अच्छे कामों वाले हैं[87] बख़्शिश और बड़े सवाब का

اٰیاتھا ١٨ ﴿٤٩﴾ سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ ﴿١٠٦﴾ رکوعاتھا ٢

सूरए हुजुरात मदनिय्या है, इस में अठ्ठारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا

ऐ ईमान वालो अल्लाह और उस के रसूल से आगे न बढ़ो[2] और अल्लाह से

اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا

डरो बेशक अल्लाह सुनता जानता है ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें

اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ

ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से[3] और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के

لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (ज़ाएअ़) न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो[4] बेशक वोह जो

87 : सह़ाबा सब के सब साहिबे ईमान व अ़मले सालेह़ हैं इस लिये येह वा'दा सभी से है। **1 :** सूरए हुजुरात मदनिय्या है, इस में दो रुकूअ़ अठ्ठारह आयतें, तीन सो तेंतालीस कलिमे और एक हज़ार चार सो छिहत्तर ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी तुम्हें लाज़िम है कि अस्लन तुम से तक़्दीम वाक़ेअ़ न हो न क़ौल में न फ़े'ल में कि तक़्दीम करना रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अदबो एह़तिराम के ख़िलाफ़ है, बारगाहे रिसालत में नियाज़ मन्दी व आदाब लाज़िम हैं। **शाने नुज़ूल :** चन्द शख़्सों ने ईदुद्दुह़ा के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से पहले क़ुरबानी कर ली तो उन को हुक्म दिया गया कि दोबारा क़ुरबानी करें और ह़ज़रते आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि बा'ज़े लोग रमज़ान से एक रोज़ पहले ही रोज़ा रखना शुरूअ़ कर देते थे उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया कि रोज़ा रखने में अपने नबी से तक़द्दुम न करो। (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) **3 :** या'नी जब हुज़ूर (बारगाहे रिसालत) में कुछ अ़र्ज़ करो तो आहिस्ता पस्त आवाज़ से अ़र्ज़ करो, येही दरबारे रिसालत का अदबो एह़तिराम है। **4 :** इस आयत में हुज़ूर का इज्लालो इक्राम व अदबो एह़तिराम ता'लीम फ़रमाया गया और हुक्म दिया गया कि निदा करने में अदब का पूरा लिह़ाज़ रखें, जैसे आपस में एक दूसरे को नाम ले कर पुकारते हैं इस त़रह़ न पुकारें, बल्कि कलिमाते अदबो ता'ज़ीम व तौसीफ़ो तक्रीम व अल्क़ाबे अ़ज़मत के साथ अ़र्ज़ करो जो अ़र्ज़ करना हो कि तर्के अदब से नेकियों के बरबाद होने का अन्देशा है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास के ह़क़ में नाज़िल हुई, इन्हें सिक़्ले समाअ़त था (या'नी ऊंची आवाज़ से सुनते थे) और आवाज़ इन की ऊंची थी बात करने में आवाज़ बुलन्द हो जाया करती थी, जब येह आयत नाज़िल हुई तो ह़ज़रते साबित अपने घर में बैठ रहे और कहने लगे कि मैं अहले नार से हूं। हुज़ूर ने ह़ज़रते सा'द से उन का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाया। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि वोह मेरे पड़ोसी हैं और मेरे इल्म में उन्हें कोई बीमारी तो नहीं हुई, फिर आ कर ह़ज़रते साबित से इस का ज़िक्र किया साबित ने कहा : येह आयत नाज़िल हुई और तुम जानते हो कि मैं तुम सब से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ हूं तो मैं जहन्नमी हो गया। ह़ज़रते सा'द ने येह ह़ाल ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वोह अहले जन्नत से हैं।